भारत और उत्तरी समुद्री मार्ग

प्रिलिम्स के लिये:

आर्कटिक क्षेत्र, उत्तरी समुद्री मार्ग, भारत की ऊर्जा सुरक्षा, संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास लक्ष्य, हिमालय, स्वेज़ नहर, चेन्नई-व्लादिवोस्तोक पूर्वी समुद्री गलियारा

मेन्स के लिये:

भारत और उत्तरी समुद्री मार्ग

स्रोत: द हिंदू

चर्चा में क्यों?

आर्कटिक क्षेत्र की राजधानी तथा उत्तरी समुद्री मार्ग **(Northern Sea Route- NSR)** का प्रारंभिक बिंदु कहे जाने वाले मूरमान्स्क (Murmansk) में **कार्गो यातायात में भारतीय भागीदारी** की बढ़ती प्रवृत्ति देखी जा रही है।

- **वर्ष 2023 के पहले सात महीनों में भारत को मूरमान्स्क बंदरगाह द्वारा संभाले गए आठ मिलियन टन कार्गो का 35% हिस्सा मिला, जो मॉस्को (Moscow), रूस से लगभग 2,000 किमी. उत्तर पश्चिम में है।**

भारत के लिये आर्कटिक का महत्त्व:

- **अप्रयुक्त हाइड्रोकार्बन भंडार:**
    - यह क्षेत्र पृथ्वी पर शेष हाइड्रोकार्बन के लिये **सबसे बड़ा अज्ञात संभावित क्षेत्र** है। अनुमान है कि इस क्षेत्र में तेल और गैस के मौजूदा वैश्विक भंडार का 40% से अधिक हो सकता है।
    - इस क्षेत्र में कोयला, जिप्सम तथा हीरे के समृद्ध भंडार हैं और जस्ता, सीसा, प्लसर सोना तथा क्वार्ट्ज के भी पर्याप्त भंडार हैं।
        - अतः आर्कटिक संभावित रूप से भारत की ऊर्जा सुरक्षा ज़रूरतों और रणनीतिक तथा दुर्लभ पृथ्वी खनिजों की कमी को संबोधित कर सकता है।
        - हालाँकि सरकार की वर्ष 2022 की आर्कटिक नीति में उल्लेख किया गया है कि क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिये देश का दृष्टिकोण संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास लक्ष्यों द्वारा निर्देशित है।
- **भारत की ऐतिहासिक भागीदारी:**
    - आर्कटिक के साथ भारत का जुड़ाव **वर्ष 1920 में स्वालबार्ड संधि** पर हस्ताक्षर करने के समय से है।
    - भारत ने इस क्षेत्र में **वायुमंडलीय, जैविक, समुद्री, जल विज्ञान** और हिमनद विज्ञान संबंधी अध्ययनों पर ध्यान केंद्रित करते हुए विभिन्न वैज्ञानिक अध्ययन और अनुसंधान किये हैं।
    - हिमाद्रि अनुसंधान स्टेशन, मल्टी-सेंसर मूरड वेधशाला और उत्तरी वायुमंडलीय प्रयोगशाला जैसी पहल आर्कटिक अनुसंधान के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।
        - वर्ष 2013 में आर्कटिक परिषद का पर्यवेक्षक-राज्य बनने से **भारत की आर्कटिक उपस्थिति** मज़बूत हुई।
- **भौगोलिक महत्त्व:**
    - आर्कटिक दुनिया की समुद्री धाराओं को प्रसारित करने, ठंडे और गर्म पानी को दुनिया भर में ले जाने में सहायता करता है।
    - इसके अलावा आर्कटिक समुद्री बर्फ ग्रह के शीर्ष पर एक विशाल सफेद परावर्तक के रूप में कार्य करता है, जो सूर्य की कुछ किरणों को वापस अंतरिक्ष में भेजता है, जिससे पृथ्वी को एक समान तापमान पर रखने में सहायता मिलती है।
- **पर्यावरणीय महत्त्व:**
    - आर्कटिक और हिमालय हालाँकि भौगोलिक रूप से दूर हैं, आपस में जुड़े हुए हैं और समान चिंताएँ साझा करते हैं।
        - आर्कटिक का पिघलना **वैज्ञानिक समुदाय को हिमालय में हिमनदों के पिघलने को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर रहा है** , जिसे अक्सर 'तीसरा ध्रुव' कहा जाता है तथा उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों के बाद इसमें सबसे बड़ा मीठे पानी का भंडार है।
        - इसलिये आर्कटिक का अध्ययन भारतीय वैज्ञानिकों के लिये महत्त्वपूर्ण है। इसी क्रम में भारत ने वर्ष 2007 में आर्कटिक

महासागर में अपना पहला वैज्ञानिक अभियान शुरू किया तथा स्वालबार्ड द्वीप समूह (Svalbard archipelago,Norway) में **हिमाद्री अनुसंधान आधार** खोला और तब से सक्रिय रूप से वहाँ अनुसंधान में प्रयासरत है।

उत्तरी समुद्री मार्ग (NSR):

- **परिचय:**
  - **यूरोप और एशिया-प्रशांत क्षेत्र के देशों के बीच माल परिवहन के लिये NSR सबसे छोटा शिपिंग मार्ग है, जो आर्कटिक महासागर के चार समुद्रों (बैरेंट्स, कारा, लापतेव और पूर्वी साइबेरियाई सागर) तक फैला हुआ है।**
  - 5,600 किमी. के क्षेत्र में फैला हुआ यह मार्ग बैरेंट्स और **कारा समुद्र (कारा जलसंधि)** के बीच की सीमा से शुरू होता है तथा **बेरिंग जलसंधि (प्रोवडिनिया खाड़ी)** में जा कर रुकता है।
  - **यह सुएज़ अथवा पनामा नहरों के माध्यम से पारंपरिक मार्गों की तुलना में 50% तक की संभावित दूरी को कम करता है।**
    - वर्ष 2021 में **स्वेज़ नहर के अवरुद्ध होने** की घटना ने वैकल्पिक व्यापार मार्ग के रूप में **NSR के विकास के विचार** को गति प्रदान की है।
- **NSR के विकास में रूस की भूमिका:**
  - आर्कटिक क्षेत्र में बर्फ की अधिकता के कारण NSR के साथ सुरक्षित नेविगेशन के लिये बर्फ को हटाने के कार्य में सहायता की आवश्यकता होती है। रूस का दावा है कि उसके पास विश्व भर के एकमात्र परमाणु-संचालित आइसब्रेकर बेड़े हैं, इसके सहारे वह इनका वर्ष भर संचालन सुनिश्चित करता है। **NSR इंफ्रास्ट्रक्चर ऑपरेटर रोसाटॉम** इस बेड़े की देख-रेख का कार्य करता है।
  - NSR के कार्गो यातायात को बढ़ाने की रूस की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं के साथ **इसका परमाणु आइसब्रेकर बेड़ा इस परियोजना के केंद्र में बना हुआ है।**
- **भारत की NSR भागीदारी के लिये प्रेरक कारक:**
  - वर्ष 2018-2022 के दौरान लगभग **73% की वृद्धि दर** के साथ NSR के साथ कार्गो यातायात में वृद्धि **भारत द्वारा रूसी कच्चे तेल और कोयले के बढ़ते आयात के अनुरूप** है।
  - पारगमन मार्ग के रूप में **NSR की क्षमता भारत की व्यापार-केंद्रित अर्थव्यवस्था** के लिये भी उपयुक्त है।
  - **चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारा** (Chennai-Vladivostok Maritime Corridor- CVMC) परियोजना **एक लघु और कुशल व्यापार मार्ग** प्रदान करती है।
  - इसके अतिरिक्त भारत NSR पर **चीन और रूस के संभावित सामूहिक प्रभाव को संतुलित** करना चाहता है।
- **भविष्य में होने वाले विकास और सहयोग:**
  - वर्ष 2035 तक रूस के NSR पर कार्गो यातायात में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है। NSR के माध्यम से भारत और रूस को जोड़ने के लिये डिज़ाइन की गई CVMC परियोजना, परिवहन समय को कम करने तथा व्यापार दक्षता को बढ़ाने में काफी मदद करेगी।
  - दोनों देशों के बीच आगामी कार्यशाला से CVMC परियोजना को आगे बढ़ाने के लिये एक मंच उपलब्ध होने की उम्मीद है।

आगे की राह

- आर्कटिक क्षेत्र में भारत की भागीदारी और NSR में इसकी बढ़ती भागीदारी **आर्थिक सुरक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता तथा व्यापार दक्षता** में इसके रणनीतिक हितों को रेखांकित करती है।
- जैसे-जैसे आर्कटिक में परिवर्तन जारी हैं, इस क्षेत्र में भारत की भूमिका बढ़ने की संभावना है, जिससे वैश्विक मंच पर इसके आर्थिक और भू-राजनीतिक हितों को आकार मिलेगा।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. कभी-कभी खबरों में दिखने वाला शब्द 'इंडार्क' (IndARC) का नाम है: (वर्ष 2015)

(a) भारतीय रक्षा में शामिल किया गया एक स्वदेशी रूप से विकसित रडार प्रणाली
(b) हिंद महासागर रिम के देशों को सेवाएँ प्रदान करने के लिये भारत का उपग्रह
(c) अंटार्कटिक क्षेत्र में भारत द्वारा स्थापित एक वैज्ञानिक प्रतिष्ठान
(d) आर्कटिक क्षेत्र का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करने के लिये पानी के नीचे भारत की वेधशाला

उत्तर: (d)

?????:

प्रश्न. आर्कटिक क्षेत्र के संसाधनों में भारत क्यों रुचि ले रहा है? (2018)

प्रश्न. आर्कटिक सागर में तेल की खोज और इसके संभावित पर्यावरणीय परिणामों के आर्थिक महत्त्व क्या हैं? (2015)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/india-s-interest-arctic-region-and-the-northern-sea-route